मोहनदास करमचंद गांधी (बुनियादी शिक्षा)

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का जन्म 2 अक्टूबर, 1869 को काठियावाड़ (गुजरात) राज्य के पोरबंदर में हुआ था। वह एक महान दार्शनिक, शिक्षाविद्, राजनेता और प्रयोगवादी थे। उन्होंने भारत में शैक्षिक विचार और व्यवहार में एक महत्वपूर्ण और ठोस योगदान दिया है। उन्होंने जीवन के एक भी पहलू को अछूता नहीं छोड़ा है। वे एक बहुमुखी दार्शनिक सह राजनेता थे। यह वास्तव में बड़ी विडंबना है कि 30 जनवरी 1948 को नाथू राम द्वारा सत्य और अहिंसा के दूत गांधी जी की गोली मारकर हत्या कर दी गई थी।

उनके सामान्य जीवन दर्शन की मुख्य विशेषताएं निम्नलिखित पैरा में वर्णित हैं:

- ईश्वर में दृढ़ विश्वास गांधी जी की ईश्वर में अटूट आस्था थी। उसके लिए ईश्वर सभी व्यापक वास्तविकता है, मनुष्य में और दुनिया में भी आसन्न है। वह परम वास्तविकता और सर्वोच्च शासक है। जीवन का अंतिम लक्ष्य ईश्वर की प्राप्ति होना चाहिए।
- सत्य- उसके लिए सत्य ही ईश्वर है और ईश्वर ही सत्य है। सत्य भीतर की आवाज है। यह आंतरिक विवेक है। यह परम सत्य या ईश्वर को प्राप्त करने का साधन है।
- अहिंसा या अहिंसा। अहिंसा का अर्थ है हिंसा से पूर्ण मुक्ति - घृणा, क्रोध, भय और दुर्भावना से मुक्ति। यह सत्य के लक्ष्य को प्राप्त करने का साधन है।
- सत्याग्रह- यह अहिंसा का व्यावहारिक अनुप्रयोग है। सत्याग्रही वह है जो सत्य, अहिंसा, निर्भयता और चोरी न करने में विश्वास रखता हो।
- व्यक्ति की आध्यात्मिक प्रकृति- उनका मानना था कि व्यक्ति में दिव्य आत्मा होती है। वह एक आध्यात्मिक प्राणी है। अंतिम लक्ष्य भौतिक नहीं आध्यात्मिक होना चाहिए।
- प्रेम- प्रेम नैतिकता का सार है। प्रेम के बिना कोई नैतिकता संभव नहीं है। सत्य को प्रेम से प्राप्त किया जा सकता है और प्रेम उसे ईश्वर की ओर ले जाता है।
- आध्यात्मिक समाज की अवधारणा। वे प्रेम, अहिंसा, सत्य और न्याय के सिद्धांत पर आधारित आध्यात्मिक समाज की स्थापना करना चाहते थे।

वर्ष 1937 में गांधी जी ने अपने प्रयोगों से शिक्षा की एक योजना को अंतिम रूप दिया और पूरे देश में इसके अनुकूलन के लिए प्रयास किया। उन्होंने 22 और 23 अक्टूबर 1937 को वर्धा में आयोजित अखिल भारतीय शिक्षा सम्मेलन में अपनी शिक्षा योजना की मुख्य विशेषताओं को भी रखा। उनकी शिक्षा योजना को शिक्षा की 'मूल योजना' या "वर्धा योजना" के रूप में जाना जाता है।

शिक्षा का अर्थ :-

गांधी के अनुसार साक्षरता अपने आप में कोई शिक्षा नहीं है। यह एक ऐसा माध्यम है जिससे स्त्री और पुरुष को शिक्षित किया जा सकता है। गांधी जी के लिए शिक्षा का अर्थ है व्यक्ति का सर्वांगीण विकास। गांधी के शब्दों में, "शिक्षा से मेरा तात्पर्य बच्चे और मनुष्य के शरीर, मन और आत्मा में सर्वोत्तम का सर्वांगीण विकास करना है।"

शिक्षा के उद्देश्य :-

गांधी जी के दो उद्देश्य थे: तत्काल लक्ष्य और अंतिम लक्ष्य।

- शिक्षा के तत्काल उद्देश्य- ये हमारे दैनिक जीवन से संबंधित हैं:
  - **रोटी और मक्खन का लक्ष्य।** शिक्षा का उद्देश्य प्रत्येक व्यक्ति को अपनी आजीविका कमाने में सक्षम बनाना होना चाहिए। उसे अपने पैरों पर खड़े होने में सक्षम बनाना चाहिए। शिक्षा बेरोजगारी के खिलाफ एक तरह का बीमा होना चाहिए।
  - **सांस्कृतिक उद्देश्य।** सांस्कृतिक उद्देश्य भारतीय संस्कृति को प्राप्त करने पर जोर देता है। वह संस्कृति जो हमारे पहनावे, हमारे बोलने के तरीके, हमारे आचरण और व्यवहार में परिलक्षित होती है। यह चीजों को उनके वास्तविक परिप्रेक्ष्य में देखने में सक्षम बनाता है।
  - **चरित्र उद्देश्य-** उन्होंने चरित्र को उसके नैतिक और आध्यात्मिक पहलुओं सहित संपूर्ण व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति के रूप में माना। गांधी के अनुसार, चरित्र और पवित्रता रहित चरित्र के बिना शिक्षा का कोई फायदा नहीं होगा।
  - **पूर्ण विकास उद्देश्य।** संपूर्ण विकास का अर्थ है बच्चे का सर्वांगीण विकास। इसका अर्थ है सिर, हृदय और हाथ का विकास न कुछ कम और न अधिक।
- शिक्षा का अंतिम उद्देश्य- आत्म-साक्षात्कार जीवन के साथ-साथ शिक्षा का अंतिम लक्ष्य है। आध्यात्मिक स्वतंत्रता ईश्वर का ज्ञान और आत्म-साक्षात्कार प्रदान करती है। इसलिए, शिक्षा को आध्यात्मिक स्वतंत्रता प्रदान करनी चाहिए।

पाठ्यक्रम : -

गांधी जी ने शिक्षा की योजना में निम्नलिखित विषयों को पढ़ाने का सुझाव दिया।

1. मूल शिल्प- उन्होंने जोर देकर कहा कि शिक्षा शिल्प केंद्रित होनी चाहिए। बुनियादी शिल्प जो कृषि, कताई, बुनाई, लकड़ी का काम आदि हो सकता है, को जीवन और समाज की स्थानीय परिस्थितियों के अनुसार शामिल किया जाना चाहिए।
2. मातृभाषा- माँ का अध्ययन किया जाना चाहिए क्योंकि यह विचारों की अभिव्यक्ति और संचार के लिए एक प्रभावी साधन है।
3. अंकगणित- अंकगणित को जीवन की स्थिति से जोड़ा जाना चाहिए। यह दैनिक जीवन के लिए बहुत उपयोगी विषय है।
4. सामाजिक अध्ययन- इसमें व्यक्तिगत और सामाजिक गुणों को बढ़ावा देने के लिए इतिहास, नागरिक भूगोल और वर्तमान घटनाओं जैसे विषय शामिल हैं।
5. सामान्य विज्ञान- बुद्धिमान और वैज्ञानिक दृष्टिकोण को बढ़ावा देने के लिए प्रकृति अध्ययन, प्राणीशास्त्र, शरीर विज्ञान, स्वच्छता, रसायन विज्ञान, वनस्पति विज्ञान और खगोल विज्ञान सहित सामान्य विज्ञान पढ़ाया जाना चाहिए। चौथी और पांचवीं कक्षा में लड़कियों के लिए घरेलू विज्ञान को जोड़ा जाना चाहिए।
6. संगीत और ड्राइंग- लड़कों और लड़कियों में शिक्षा के प्रति वास्तविक रुचि पैदा करने के लिए इन विषयों को शामिल किया जाना चाहिए।
7. हिंदुस्तानी के लिए जगह- एक राष्ट्रीय भाषा को स्कूली पाठ्यक्रम में शामिल और पढ़ाया जाना चाहिए।

पढ़ाने के तरीके :-

1. शिल्प के माध्यम से शिक्षा। गांधी जी ने इस बात पर जोर दिया कि शिक्षा किसी शिल्प या उत्पादन कार्य के माध्यम से दी जानी चाहिए।
2. स्वयं के अनुभव से गतिविधि पद्धति और सीखने पर जोर। उन्होंने शिक्षण के क्षेत्र में गतिविधि पद्धति पर जोर दिया। उन्होंने जोर देकर कहा कि करने से सीखना और स्वयं के अनुभव से सीखना बहुत प्रभावी है।
3. सहसंबंध विधि। उन्होंने सहसंबंध की विधि की वकालत की। विभिन्न विषयों की शिक्षा सहसम्बन्धित ज्ञान के रूप में होनी चाहिए न कि पृथक विषयों के रूप में।
4. व्याख्यान और पूछताछ विधि। उन्होंने व्याख्यान पद्धति के साथ-साथ प्रश्न पद्धति के उपयोग को स्वीकार किया।
5. शिक्षा के माध्यम के रूप में मातृभाषा। वह चाहते थे कि सभी शिक्षा मातृभाषा के माध्यम से दी जानी चाहिए।

अनुशासन :-

गांधी जी ने आत्म-नियंत्रण के माध्यम से अनुशासन की वकालत की। उन्होंने स्वैच्छिक अनुशासन या अनुशासन पर जोर दिया जो भीतर से पैदा होता है। आत्म-संयम, निर्भयता, उपयोगिता और आत्म-बलिदान के शुद्ध जीवन से आत्म अनुशासन उत्पन्न होता है। यह जीवन के अहिंसक आचरण के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है।

अध्यापक : -

गांधी जी ने जोर देकर कहा कि केवल सही प्रकार का शिक्षक ही शिक्षा के उद्देश्यों को प्राप्त करने में मदद कर सकता है। उसके पास ज्ञान, कौशल, उत्साह, देशभक्ति, मजबूत चरित्र और विशेष प्रशिक्षण होना चाहिए। वह मित्र, दार्शनिक और मार्गदर्शक होना चाहिए। उन्हें अहिंसा और सत्य के सामाजिक दृष्टिकोण और आदर्शों से प्रेरित होना चाहिए। उसे जीवन और शिक्षा के उद्देश्यों के लिए अच्छी तरह से सुसज्जित और पूरी तरह से जीवित होना चाहिए। उसके पास वह गुण होना चाहिए जो वह छात्रों में पैदा करना चाहता है। उसे स्वयं में गुणों का अभ्यास करना चाहिए। वह छात्रों के साथ दिल से दिल का संपर्क स्थापित करने में सक्षम होना चाहिए।